

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 2, मानवता की छवियाँ

© 2025 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2 है, मानवता की छवियाँ।

मानवता और पाप पर हमारे व्याख्यानों में आपका स्वागत है। विशेष रूप से, हम अभी भी मानवशास्त्र के सिद्धांत का परिचय दे रहे हैं, और हम मानवता की छवियों के बारे में सोच रहे हैं, जिनमें से अधिकांश बाइबिल में नहीं हैं, लेकिन हमारे लिए यह समझना मूल्यवान है कि दुनिया मनुष्य को एक मशीन के रूप में कैसे देखती है, नंबर एक। इन दृष्टिकोणों में से एक यह है कि मनुष्य क्या करने में सक्षम हैं।

उदाहरण के लिए, नियोक्ता को किसी व्यक्ति की ताकत और ऊर्जा के साथ-साथ उसके पास मौजूद कौशल या क्षमताओं में भी दिलचस्पी होती है। इस आधार पर, नियोक्ता कर्मचारी को एक दिन में कुछ निश्चित घंटों के लिए किराए पर देता है। इंसानों को कभी-कभी मशीन के रूप में देखा जाता है, जो विशेष रूप से तब स्पष्ट होता है जब स्वचालन के परिणामस्वरूप किसी कर्मचारी को नौकरी से निकाल दिया जाता है।

रोबोट अधिक सटीक और सुसंगत होने के कारण अक्सर काम को बेहतर तरीके से करता है। इसके अलावा, इसे कम ध्यान देने की आवश्यकता होती है, वेतन वृद्धि की मांग नहीं करता है, और बीमारी के कारण समय नहीं गंवाता है। मनुष्यों की इस अवधारणा वाले लोगों की मुख्य चिंता उस व्यक्ति या मशीन की ज़रूरतों को पूरा करना होगी जो इसे प्रभावी ढंग से काम करने में सक्षम बनाएगी।

श्रमिकों का स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है, न कि संभावित व्यक्तिगत संकट के कारण, बल्कि कार्य कुशलता के संदर्भ में। यदि मशीन द्वारा या अधिक उन्नत तकनीकों के प्रयोग से काम बेहतर ढंग से किया जा सकता है, तो ऐसे उपायों को अपनाने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी। क्योंकि काम ही प्राथमिक लक्ष्य और चिंता है।

इसके अलावा, कार्यकर्ता को कार्य पूरा करने के लिए आवश्यक न्यूनतम भुगतान किया जाता है। बिजनेस वीक। रोबोट आक्रमण से श्रमिक चिंतित होने लगते हैं।

बिज़नेस वीक, 29 मार्च 1982 पहले से ही। यह दृष्टिकोण एक हद तक चर्च में भी घुस गया है।

व्यक्तियों का मूल्यांकन इस आधार पर किया जा सकता है कि वे क्या कर सकते हैं। चर्च अक्सर अपने पादरी के चयन में इसे प्रतिबिंबित कर सकते हैं, वे किसी ऐसे व्यक्ति को चाहते हैं जो किसी दिए गए मंत्रालय, सेवकाई या सेवकाई कार्य को प्रभावी ढंग से और कुशलता से कर सके। ऐसे सदस्यों को शामिल करने की विशेष चिंता हो सकती है जो चर्च के काम को पूरा कर सकें।

संभावित धर्मांतरित लोगों को मुख्य रूप से दान देने वाली इकाइयों के रूप में देखा जा सकता है जो चर्च के कार्यक्रमों को वित्तपोषित करने में मदद कर सकते हैं। एक पादरी ने अपने मण्डली के बुजुर्गों और बंद घरों में रहने वाले सदस्यों से मिलने को जंक कॉल के रूप में संदर्भित किया। मुझे गुस्सा आता है क्योंकि ऐसे लोग चर्च के काम में ज्यादा योगदान नहीं दे सकते।

ऐसे पादरी पर शर्म आती है। इन सभी उदाहरणों में, मनुष्य को एक मशीन के रूप में देखा जाता है। लोगों को इस बात के लिए महत्व दिया जाता है कि वे क्या कर सकते हैं, न कि इस बात के लिए कि उनके लिए क्या किया जा सकता है, जो कि मंत्रालय है।

इस दृष्टिकोण में, व्यक्तियों को मूल रूप से वस्तुओं के रूप में माना जाता है, न कि स्वयं में लक्ष्य के रूप में। जब तक वे उपयोगी हैं, तब तक वे मूल्यवान हैं। उन्हें शतरंज के मोहरों की तरह इधर-उधर घुमाया जा सकता है, जैसा कि कुछ बड़ी कंपनियाँ अपने प्रबंधन कर्मियों के साथ करती हैं, और यदि आवश्यक हो तो अपने इच्छित कार्य को पूरा करने के लिए उनमें हेरफेर करती हैं।

मनुष्य के बारे में एक और दृष्टिकोण यह है कि मनुष्य मुख्य रूप से पशु जगत के सदस्य हैं और इसके कुछ उच्चतर रूपों से निकले हैं। मनुष्य भी अन्य सभी जानवरों की तरह ही एक ही तरह की प्रक्रिया से अस्तित्व में आया है और उसका अंत भी एक जैसा ही होगा।

मनुष्य और अन्य जानवरों के बीच कोई गुणात्मक अंतर नहीं है। केवल डिग्री का अंतर है, कुछ हद तक अलग लेकिन जरूरी नहीं कि बेहतर शारीरिक संरचना, बड़ी कपाल क्षमता, अधिक प्रशिक्षित उत्तेजना प्रतिक्रिया तंत्र। मानवता का यह दृष्टिकोण शायद व्यवहारवादी मनोविज्ञान में सबसे अधिक विकसित है।

यहाँ, मानवीय प्रेरणा को जैविक प्रेरणाओं के संदर्भ में समझा जाता है। मनुष्यों के बारे में ज्ञान आत्मनिरीक्षण से नहीं बल्कि जानवरों पर प्रयोग करके प्राप्त किया जाता है। जानवरों पर इस्तेमाल की जाने वाली प्रक्रियाओं से मानवीय व्यवहार प्रभावित हो सकता है।

जिस तरह पावलोव के कुत्ते ने घंटी बजने पर लार टपकाना सीखा था, उसी तरह मनुष्य को भी कुछ खास तरीकों से प्रतिक्रिया करने के लिए तैयार किया जा सकता है। सकारात्मक सुदृढ़ीकरण, पुरस्कार और कम वांछनीय नकारात्मक सुदृढ़ीकरण, दंड, नियंत्रण और प्रशिक्षण के साधन हैं। व्यवहारवादी मनोविज्ञान पर, उदाहरण के लिए पॉल यंग, व्यवहार की प्रेरणा, मानव और पशु गतिविधि के मौलिक निर्धारक, 1936 देखें।

एक कामुक प्राणी, सिगमंड फ्रायड ने कामुकता को मानव स्वभाव की कुंजी माना। एक ऐसी दुनिया में जहाँ सेक्स पर खुले तौर पर चर्चा नहीं की जाती थी या यहाँ तक कि सभ्य समाज और समाज में इसका उल्लेख भी नहीं किया जाता था, फ्रायड ने मानव कामुकता के इर्द-गिर्द व्यक्तित्व का एक पूरा सिद्धांत विकसित किया। मानव व्यक्तित्व का उनका मॉडल त्रिपक्षीय था।

यहाँ एक इद है, जो अनिवार्य रूप से अनैतिक हिस्सा है, न तो नैतिक और न ही अनैतिक, यह आवेगों और इच्छाओं का एक उबलता हुआ कड़ाहा है। इद से व्युत्पन्न, अहंकार व्यक्तित्व का

सचेत घटक है, व्यक्ति का अधिक सार्वजनिक हिस्सा है। यहाँ, इद से, कुछ हद तक संशोधित होने वाली शक्तियाँ, संतुष्टि की तलाश करती हैं।

सुपरइगो व्यक्ति की इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण या सेंसर है। माता-पिता के संयम और विनियमन का आंतरिककरण, या कम से कम बच्चे की गतिविधियों का निर्माण। महान प्रेरक शक्ति या ऊर्जा का स्रोत कामेच्छा है, जो मूल रूप से यौन शक्ति है जो किसी भी संभावित तरीके और स्थान पर संतुष्टि चाहती है।

मूल रूप से सभी मानवीय व्यवहार को इस प्लास्टिक यौन ऊर्जा के संशोधन और दिशा के रूप में समझा जाना चाहिए। यह ऊर्जा अन्य प्रकार के व्यवहार में परिवर्तित हो सकती है और अन्य लक्ष्यों की ओर निर्देशित हो सकती है, लेकिन फिर भी यह मानवीय गतिविधि का प्रमुख निर्धारक है। सिगमंड फ्रायड, साइकोएनालिसिस पर नया परिचयात्मक व्याख्यान, 1933।

फ्रायड के अनुसार, इस यौन ऊर्जा को जिस तरह से संभाला जाता है, उससे गंभीर कुसमायोजन हो सकता है। चूँकि आईडी पूर्ण और निर्बाध संतुष्टि के लिए प्रेरित और प्रयास करती है, एक ऐसी स्थिति जो समाज को असंभव बना देगी, समाज संतुष्टि के लिए इस संघर्ष और अक्सर इसके साथ होने वाली आक्रामकता पर सीमाएँ लगाता है। ये सीमाएँ तब निराशा पैदा कर सकती हैं।

गंभीर कुसमायोजन तब भी होता है जब किसी व्यक्ति का यौन विकास प्रक्रिया के शुरुआती चरणों में से एक में रुक जाता है। फ्रायड के ये सिद्धांत इस अवधारणा पर आधारित हैं कि सभी मानव व्यवहार मूल रूप से यौन प्रेरणा और ऊर्जा से उत्पन्न होते हैं। हालाँकि फ्रायड द्वारा विकसित सैद्धांतिक योजना को बहुत व्यापक स्वीकृति नहीं मिली है, शुक्र है कि उनकी मूल धारणा व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है।

काफी हद तक, प्लेबॉय दर्शन यह मानता है कि मनुष्य मुख्य रूप से एक यौन प्राणी है, और सेक्स सबसे महत्वपूर्ण मानवीय अनुभव है। आज के अधिकांश विज्ञापन भी इसी विचार को बढ़ावा देते हैं, लगभग ऐसा लगता है कि यौन भावना के बिना कुछ भी बेचा नहीं जा सकता। सेक्स के प्रति जुनून यह दर्शाता है कि व्यवहार में, यह विचार कि मनुष्य अनिवार्य रूप से यौन प्राणी हैं, हमारे समाज में व्यापक रूप से प्रचलित है।

मैंने एक बार ओल्ड टेस्टामेंट के प्रसिद्ध विद्वान ट्रेम्पर लॉन्गमैन का सोलोमन के गीत पर व्याख्यान सुना था, और उन्होंने यह कहकर शुरुआत की थी कि, हालाँकि दुनिया कई बार जीवन को अत्यधिक कामुक बना देती है, लेकिन कभी-कभी रूढ़िवादी ईसाई इसे कम करते हैं। और उन्होंने कहा कि बाइबल की यह पुस्तक मुख्य रूप से पति और पत्नी के बीच अंतरंग संबंधों के बारे में है। और उन्होंने इसे संभाला, वास्तव में उनके पास सोलोमन के गीत पर एक टिप्पणी, एक विद्वत्तापूर्ण टिप्पणी भी है।

सैद्धांतिक योजना के अनुसार, या बस यही किया, क्षमा करें, कभी-कभी ईसाई धर्म, अपने नैतिक नियमों के साथ, और विशेष रूप से इंगील ईसाई धर्म, सेक्स के मामले में बहुत अधिक निर्णयात्मक होने के लिए आलोचना की जाती है। जोसेफ फ्लेचर उन लोगों में से थे जिन्होंने इस आलोचना को आवाज़ दी। जोसेफ फ्लेचर ने 1967 में नैतिक जिम्मेदारी लिखी।

लेकिन क्या ईसाई नैतिकता अनावश्यक रूप से निर्णयात्मक है, या यह हमारे समाज में सेक्स की अत्यधिक भूमिका के प्रति एक उचित प्रतिक्रिया है? सीएस लुईस ने देखा कि हमारे समाज में गतिविधि का एक बड़ा हिस्सा मानव कामुकता के साथ अत्यधिक व्यस्तता पर आधारित है। और मैं सीएस लुईस के *मेर क्रिश्चियनिटी से उद्धृत करता हूँ*, "आप एक स्ट्रिपटीज़ एक्ट के लिए एक बड़े दर्शक वर्ग को एक साथ ला सकते हैं, यानी एक लड़की को मंच पर कपड़े उतारते हुए देखना।" अब, मान लीजिए कि आप ऐसे देश में आए हैं जहाँ आप एक थिएटर भर सकते हैं; वह इस बात को कहते हैं; वह बेतुके तर्क दे रहे हैं, लेकिन बस एक ढकी हुई प्लेट लाना अच्छा है।

मुझे खेद है, वह मुझे गुदगुदा रहा है। आप किसी ऐसे देश में जाते हैं जहाँ मंच पर एक ढकी हुई प्लेट लाकर और धीरे-धीरे ढक्कन उठाकर बड़ी भीड़ इकट्ठी की जाती है ताकि रोशनी बंद होने से ठीक पहले सभी को पता चल सके कि उसमें मटन चॉप या थोड़ा बेकन है। क्या आपको नहीं लगता कि उस देश में, भोजन की भूख के साथ कुछ गड़बड़ हो गई थी? और क्या कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी दूसरी दुनिया में पला-बढ़ा हो, यह नहीं सोचेगा कि इसमें कुछ अजीब बात है? और क्या किसी दूसरे समय अवधि, यानी किसी पिछले समय अवधि के लोग यह नहीं सोचेंगे कि हमारे बीच यौन प्रवृत्ति की स्थिति के बारे में कुछ अजीब बात है? उद्धरण बंद करें।

एक आर्थिक प्राणी। दूसरा दृष्टिकोण यह है कि आर्थिक ताकतें ही वास्तव में मनुष्य को प्रभावित और प्रेरित करती हैं। एक अर्थ में, यह दृष्टिकोण उस दृष्टिकोण का विस्तार है कि मनुष्य मुख्य रूप से पशु साम्राज्य का सदस्य है।

यह जीवन के भौतिक आयाम और उसकी आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करता है। पर्याप्त भोजन, वस्त्र और आवास मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताएं हैं। जब व्यक्ति के पास अपने और अपने आश्रितों के लिए पर्याप्त मात्रा में इन्हें प्रदान करने के लिए आर्थिक संसाधन होते हैं, तो वे संतुष्ट होते हैं या इस तरह अपनी नियति प्राप्त कर लेते हैं।

मानवता की इस समझ को सबसे अधिक पूर्ण रूप से और सबसे अधिक लगातार विकसित करने वाली विचारधारा, निश्चित रूप से, साम्यवाद, या द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है, जैसा कि इसे अधिक सटीक रूप से लेबल किया गया है। यह विचारधारा आर्थिक शक्तियों को प्रगतिशील चरणों के माध्यम से इतिहास को आगे बढ़ाने के रूप में देखती है। सबसे पहले गुलामी आई।

इस चरण में, समाज के स्वामी के पास सारी संपत्ति होती है, जिसमें अन्य मनुष्य भी शामिल होते हैं। फिर सामंतवाद आया, जहाँ स्वामी-सेवक संबंध मॉडल था। फिर पूंजीवाद आया, जहाँ शासक वर्ग के पास उत्पादन के साधन थे और उन्होंने दूसरों को काम पर रखा।

उदार पूंजीवाद में, खेतों और कारखानों पर अभी भी निजी स्वामित्व है, लेकिन सरकार मालिकों पर कुछ सीमाएं लगाती है, जिससे मजदूर की सौदेबाजी की स्थिति आसान हो जाती है। साम्यवादी विचारधारा के अनुसार, अंततः वह समय आएगा जब उत्पादन के साधनों पर कोई निजी स्वामित्व नहीं होगा। वे पूरी तरह से राज्य के स्वामित्व में होंगे।

वर्गों के बीच आर्थिक अंतर खत्म हो जाएगा और इसके साथ ही उनके बीच संघर्ष भी होगा। इस वर्गहीन समाज में बुराई खत्म हो जाएगी। मूर्खों के सोने की बात करें।

ओह! द्वंद्ववाद के अंतिम चरण में, साम्यवाद का आदर्श वाक्य साकार होगा, उद्धरण, प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार, उद्धरण समाप्त करें। शीश।

मैं हंसता हूँ या रोता हूँ। भौतिक और आर्थिक ताकतें इतिहास को उसके अंतिम लक्ष्य तक ले जाएंगी। इसकी जड़ें, निश्चित रूप से, कार्ल मार्क्स के लेखन में हैं।

यदि द्वंद्ववात्मक भौतिकवाद इस दर्शन का सबसे पूर्ण सूत्रीकरण है, तो यह एकमात्र नहीं है। वैसे, कार्ल मार्क्स की कैपिटल 1936 जानकारी का एक बड़ा स्रोत है। लोकप्रिय स्तर पर, यह अवधारणा कि मनुष्य मुख्य रूप से आर्थिक शक्तियों से प्रेरित होते हैं, अमेरिकी राजनेताओं के एक बड़े प्रतिशत का दर्शन प्रतीत होता है, और दुर्भाग्य से, यह सही हो सकता है।

संभवतः, वे वही दर्शाते हैं जो उनके सर्वेक्षण बताते हैं कि उनके अधिकांश मतदाताओं की वास्तविक चिंताएँ क्या हैं। ये आर्थिक ताकतें जनसंख्या प्रवृत्तियों और अन्य मामलों को प्रभावित करने में कार्यरत हैं। एक उदाहरण के रूप में विचार करें कि यह मुख्य रूप से जलवायु नहीं है, कम से कम सीधे तौर पर नहीं, जो अधिकांश लोगों के रहने के स्थान को प्रभावित करती है।

बल्कि, यह संसाधन, नौकरियों की उपलब्धता, ब्रह्मांड का मोहरा है। कुछ अस्तित्ववादियों के बीच, विशेष रूप से, लेकिन समाज के एक व्यापक वर्ग में भी, हम यह विचार पाते हैं कि मनुष्य दुनिया की उन शक्तियों की दया पर हैं जो उनके भाग्य को नियंत्रित करती हैं लेकिन उनके लिए कोई वास्तविक चिंता नहीं करती हैं। उन्हें अंधी ताकतों, कई मामलों में संयोग की ताकतों के रूप में देखा जाता है।

माफ़ करें। कभी-कभी, उन्हें व्यक्तिगत ताकतों के रूप में देखा जाता है। लेकिन फिर भी, वे ऐसी ताकतें हैं जिन पर व्यक्तियों का कोई प्रभाव नहीं होता है, जैसे कि राजनीतिक महाशक्तियाँ।

यह मूल रूप से एक निराशावादी दृष्टिकोण है जो लोगों को एक ऐसी दुनिया द्वारा कुचले जाने के रूप में चित्रित करता है जो या तो शत्रुतापूर्ण है या, सबसे अच्छे रूप में, उनके कल्याण और जरूरतों के प्रति उदासीन है। इसका परिणाम असहायता, निरर्थकता की भावना है। बर्ट्रैंड रसेल ने इस भावना को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है, उद्धरण, अडिग निराशा।

और मैं उसे उद्धृत करता हूँ। और जैसा कि एरिक्सन ने अपने लेखन, मिस्टिसिज्म, एंड लॉजिक, 1929, से उद्धृत किया है, कि मनुष्य उन कारणों का उत्पाद है जिनके पास उस लक्ष्य को प्राप्त करने का कोई प्रावधान नहीं है जिसे वे प्राप्त करना चाहते हैं, कि उसका उद्गम, उसका विकास, उसकी आशाएँ और भय, उसका प्रेम और उसके विश्वास परमाणुओं के आकस्मिक संयोजन का परिणाम मात्र हैं, कि कोई भी आग, कोई भी वीरता, विचार और भावना की कोई भी तीव्रता किसी व्यक्ति के जीवन को कब्र से परे सुरक्षित नहीं रख सकती है, कि युगों के सभी श्रम, सभी समर्पण, सभी प्रेरणा, मानव प्रतिभा की सभी दोपहर की चमक सौर मंडल की विशाल मृत्यु में विलुप्त होने

के लिए डिज़ाइन की गई है, और मनुष्य की उपलब्धि का पूरा मंदिर अनिवार्य रूप से खंडहर ब्रह्मांड के मलबे के नीचे दफन हो जाएगा। ये सभी बातें, यदि पूरी तरह से विवाद से परे नहीं हैं, तो भी इतनी लगभग निश्चित हैं कि कोई भी दर्शन जो उन्हें अस्वीकार करता है, वह टिकने की उम्मीद नहीं कर सकता है।

केवल इन सत्यों की छतरी के भीतर, केवल अडिग निराशा की दृढ़ नींव पर ही आत्मा का निवास सुरक्षित रूप से बनाया जा सकता है। शक्तिहीन में विश्वास ही मनुष्य का जीवन है। उस पर और उसकी पूरी जाति पर, धीरे-धीरे, निश्चित विनाश निर्दयी और अंधकारमय रूप से गिरता है।

अच्छाई और बुराई के प्रति अंधा, विनाश के प्रति लापरवाह, सर्वशक्तिमान पदार्थ अपने अथक तरीके से आगे बढ़ता रहता है। आज अपने सबसे प्रिय को खोने के लिए अभिशप्त मनुष्य के लिए, कल खुद को अंधकार के द्वार से गुज़रना होगा, उसके लिए केवल यही बचता है कि वह आघात लगने से पहले ही उन महान विचारों को संजोए जो उसके छोटे से दिन को महान बनाते हैं। अपने ज्ञान और निंदा को एक पल के लिए सहन करने वाली अप्रतिरोध्य शक्तियों का गर्व से विरोध करते हुए, अकेले ही एक थके हुए लेकिन अडिग एटलस को बनाए रखने के लिए, वह दुनिया जिसे उसके अपने आदर्शों ने गढ़ा है, अचेतन शक्ति के रौंदने वाले मार्च के बावजूद।" यक।

लड़के, क्या हमें उन अंतिम चीजों और आशा का अध्ययन करने की ज़रूरत है जो मसीह अपने लोगों के लिए लेकर आता है। यह निराशा है। यह आत्महत्या होने का इंतज़ार कर रही है।

अस्तित्ववादी जीन-पॉल सार्त्र ने अपने कई लेखों में बेतुकेपन और निराशा के इस विषय को विकसित किया है। इनमें से एक, द वॉल, एक क्रांतिकारी समूह के सदस्य की कहानी बताती है जिसे पकड़ लिया गया है। उसे तब तक मार दिया जाना चाहिए जब तक कि वह समूह के नेता ग्राएस, ग्राएस के ठिकाने का खुलासा न कर दे।

वह जानता है कि ग्रीस एक तहखाने में छिपा हुआ है, लेकिन वह इस जानकारी को उजागर नहीं करने का दृढ़ निश्चय करता है। अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए, वह जीवन, अपनी प्रेमिका और अपने मूल्यों पर विचार करता है। वह निष्कर्ष निकालता है कि उसे वास्तव में परवाह नहीं है कि वह जीवित रहे या मर जाए।

अंत में, मज़ाक में, वह गार्डों से कहता है कि ग्रीस कब्रिस्तान में छिपा हुआ है। वे उसे ढूँढने निकल पड़ते हैं। जब वे वापस लौटते हैं, तो नायक को मुक्त कर दिया जाता है।

उसे पता नहीं था कि ग्रीस कब्रिस्तान जाने के लिए अपने छिपने के स्थान से निकल गया था और वहाँ उसे पकड़ लिया गया था। नायक का जीवन, वह जीवन जो वह अब नहीं चाहता, भाग्य के एक विडंबनापूर्ण मोड़ के कारण बच गया है। जीन-पॉल सार्त्र, दोस्तोवस्की से सार्त्र तक अस्तित्ववाद में दीवार, हार्वर्ड के एक प्रसिद्ध, प्रतिभाशाली नास्तिक दार्शनिक वाल्टर कॉफ़मैन द्वारा संपादित, 1956।

अल्बर्ट कैमस ने भी सिसिफस के शास्त्रीय मिथक को फिर से लिखने में इस सामान्य विचार को पकड़ा है। यह एक जुबान घुमाने वाली बात है। सिसिफस मर गया था और पाताल लोक चला गया था।

हालाँकि, उसे वापस धरती पर भेज दिया गया था। जब उसे पाताल लोक में वापस बुलाया गया, तो उसने वापस लौटने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह जीवन के सुखों का भरपूर आनंद ले रहा था। सज़ा के तौर पर, उसे वापस लाया गया और एक बड़ी चट्टान को पहाड़ी की चोटी पर धकेलने की सज़ा सुनाई गई।

लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा, तो वह फिर से लुढ़क कर नीचे आ गया। वह पहाड़ी के नीचे की ओर चला गया और फिर से चट्टान को ऊपर की ओर धकेला, लेकिन वह फिर से नीचे लुढ़क गई। उसे इस प्रक्रिया को अंतहीन रूप से दोहराना पड़ा।

उनके सभी प्रयासों के बावजूद, कोई स्थायी परिणाम नहीं मिला। अल्बर्ट कैमस, सिसिफस का मिथक, उसी पुस्तक में है, दोस्तोवस्की से सार्त्र तक अस्तित्ववाद। वाह, यह कितना रोमांचक लेख है।

अरे, भगवान। चाहे मौत, ग्रह के आगामी प्राकृतिक विलुप्त होने, या परमाणु विनाश के बारे में भयभीत विचारों में डूबे हों, या केवल राजनीतिक और आर्थिक शक्ति को नियंत्रित करने वालों के खिलाफ संघर्ष में हों, वे सभी जो मनुष्य को मूल रूप से ब्रह्मांड की दया पर मोहरा मानते हैं, वे असहायता और हार मानने की इसी तरह की भावना से ग्रसित हैं। कोई मज़ाक नहीं।

एक स्वतंत्र प्राणी। वह दृष्टिकोण जो मानव स्वतंत्रता पर जोर देता है, वह मानव इच्छा को व्यक्तित्व का सार मानता है। यह बुनियादी दृष्टिकोण अक्सर रूढ़िवादी राजनीतिक और सामाजिक विचारों में स्पष्ट होता है।

यहाँ, संयम से मुक्ति सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है, क्योंकि यह मनुष्यों को उनके मूल स्वभाव का एहसास करने की अनुमति देता है। सरकार की भूमिका बस एक स्थिर वातावरण सुनिश्चित करना है जिसमें ऐसी स्वतंत्रता का प्रयोग किया जा सके। इसके अलावा, एक अहस्तक्षेप दृष्टिकोण का पालन किया जाना चाहिए।

अत्यधिक विनियमन से बचना चाहिए, जैसा कि पितृसत्तावाद से है, जो किसी की सभी ज़रूरतों को पूरा करता है और विफलता की संभावना को समाप्त करता है। स्वतंत्रता के साथ विफलता, अभाव से सुरक्षा से बेहतर है, लेकिन कोई वास्तविक विकल्प नहीं है। मिल्टन और रोज़ फ्राइडमैन, फ्री टू चूज़, ए पर्सनल स्टेटमेंट, 1980।

इस दृष्टिकोण को मानने वालों के अनुसार, बुनियादी मानवीय ज़रूरतें ऐसी जानकारी हैं जो बुद्धिमानी से चुनाव करने में सक्षम बनाती हैं। कार्रवाई के लिए तीन आवश्यकताओं के संदर्भ में, यह जानना कि क्या किया जाना चाहिए, जानने की इच्छा, जो किया जाना चाहिए उसे करने की इच्छा, और जो करना चाहते हैं उसे करने की क्षमता, एकमात्र वास्तविक समस्या पहले कारक के साथ है। एक बार के लिए, किसी के पास यह तय करने के लिए पर्याप्त जानकारी होती है कि क्या

किया जाना चाहिए, जो निश्चित रूप से व्यक्तिगत लक्ष्यों और क्षमताओं को ध्यान में रखता है; आंतरिक या बाहरी कुछ भी ऐसा नहीं है जो उस व्यक्ति को उस कार्रवाई को करने से रोक सके, बशर्ते सरकार उचित वातावरण सुनिश्चित करे।

इस दृष्टिकोण का मानना है कि मनुष्य के पास चुनने की क्षमता है और उसे ऐसा करना चाहिए। पूर्ण रूप से मानव होने के लिए, व्यक्ति को आत्मनिर्णय की जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिए। खुद के लिए जिम्मेदारी से इनकार करने के सभी प्रयास अनुचित हैं।

एक आम बहाना है जेनेटिक कंडीशनिंग। "मैं अपने व्यवहार को नियंत्रित नहीं कर सकता, यह मेरे जीन में है, मुझे यह मेरे पिता से विरासत में मिला है, उद्धरण बंद करें। दूसरा है मनोवैज्ञानिक कंडीशनिंग। मुझे इस तरह से पाला गया, मैं जैसा हूँ वैसा ही रहने से खुद को रोक नहीं सकता।" या सामाजिक कंडीशनिंग; जैसे-जैसे मैं बड़ा हुआ, मुझे कोई मौका नहीं मिला; शिक्षा प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं था, उद्धरण बंद करें। ये सभी बहाने अस्तित्ववाद के अप्रमाणिक अस्तित्व, खुद के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करने की अनिच्छा के उदाहरण हैं।

अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करने में यह विफलता मानव स्वभाव के मूलभूत आयाम का खंडन है और इस प्रकार, किसी की मानवता का खंडन है। इसी तरह, दूसरों को उनकी स्वतंत्र पसंद से वंचित करने का कोई भी प्रयास गलत है, चाहे वह गुलामी के माध्यम से हो, अधिनायकवादी सरकार के माध्यम से हो, अत्यधिक विनियामक लोकतंत्र के माध्यम से हो या चालाकीपूर्ण सामाजिक शैली के माध्यम से हो। विलियम अर्नेस्ट हेनले की कविता, इनविक्टस, इस दर्शन को शक्तिशाली रूप से मूर्त रूप देती है कि मनुष्य, सार रूप में, एक स्वतंत्र प्राणी है।

"मुझे ढकने वाली रात से, ध्रुव से ध्रुव तक गड्ढे की तरह काली, मैं उन सभी देवताओं को धन्यवाद देता हूँ जो मेरी अजेय आत्मा के लिए हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि द्वार कितना सीधा है, स्क्रॉल कितना दंड से भरा है, मैं अपने भाग्य का स्वामी हूँ, मैं अपनी आत्मा का कप्तान हूँ।" सामाजिक अंतिम दृष्टिकोण यह है कि एक व्यक्ति मूल रूप से समाज का सदस्य है।

व्यक्तियों के समूह में सदस्यता और उनके साथ बातचीत ही वास्तव में मानवता को अलग करती है। जो व्यक्ति अन्य सामाजिक प्राणियों के साथ बातचीत नहीं करता, वह पूर्ण मानव से कम है। एक अर्थ में कोई व्यक्ति तब तक सच्चा मानव नहीं होता जब तक कि वह किसी सामाजिक समूह के भीतर काम न कर रहा हो, मानवीय उद्देश्य या टेलोस को पूरा न कर रहा हो।

इस दृष्टिकोण में कभी-कभी यह विचार शामिल होता है कि मनुष्य के पास वास्तव में कोई प्रकृति नहीं होती। व्यक्ति रिश्तों का एक समूह है जिसमें वह शामिल होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, मानवता का सार किसी पदार्थ या निश्चित परिभाषित प्रकृति में नहीं है, बल्कि दूसरों के साथ संबंधों और संबंधों के नेटवर्क में है।

इन रिश्तों को बढ़ावा देने के माध्यम से, व्यक्ति पूरी तरह से मानव बन सकता है। चर्च सकारात्मक और रचनात्मक सामाजिक संबंधों को प्रदान करके और प्रोत्साहित करके किसी व्यक्ति को उसके भाग्य का एहसास करने में मदद कर सकता है। यह सच है, और फिर भी यह मानव सार, मानव स्वभाव का सार नहीं है।

इस प्रकार, हम मानवता के ईसाई दृष्टिकोण के साथ इस व्याख्यान का समापन करते हैं। हमने मानवता की प्रकृति के बारे में कई तरह की अवधारणाएँ देखी हैं, उनमें से कोई भी दृष्टिकोण के अनुसार जीने के लिए संतोषजनक नहीं है। कुछ, जैसे कि मनुष्य को एक जानवर के रूप में देखना, एक अमूर्त सिद्धांत के रूप में काफी अच्छा काम कर सकता है, लेकिन जीवविज्ञानी भी अपने नवजात शिशु को केवल एक स्तनपायी के रूप में नहीं सोचता है।

दूसरों के विचार विफल हो जाते हैं क्योंकि जब उनके दृष्टिकोण से, मूलभूत मानवीय ज़रूरतें, उदाहरण के लिए, आर्थिक या यौन ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं, तब भी खालीपन और असंतोष की भावना बनी रहती है। कुछ विचार, जैसे कि यंत्रवत विचार, अवैयक्तिक हैं और इसलिए, निराशाजनक हैं। कोई व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अनुभव के पहलुओं की उपेक्षा करके ही इन्हें मानवता की संतोषजनक समझ मान सकता है।

इसके विपरीत, ईसाई दृष्टिकोण हमारे सभी अनुभवों के साथ एक वैकल्पिक संगत है। मानवता के बारे में ईसाई दृष्टिकोण यह है कि मनुष्य ईश्वर का एक प्राणी है, जिसे विकास की एक संयोग प्रक्रिया के माध्यम से नहीं बल्कि ईश्वर के एक सचेत, उद्देश्यपूर्ण कार्य के माध्यम से उत्पन्न हुआ समझा जाना चाहिए। मानव अस्तित्व का कारण सर्वोच्च प्राणी के इरादे में निहित है।

मुझे एक सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य के लिए ग्रंथ सूची का उल्लेख करना चाहिए था, थॉमस ओडेन, द इंटेसिव ग्रुप एक्सपीरियंस, 1972। टॉम ओडेन इंजील ईसाई धर्म में अपने धर्मांतरण के लिए प्रसिद्ध हैं और उदार मामलों और चिंताओं के लिए समर्पित एक बहुत ही उज्ज्वल दिमाग के साथ बहुत अच्छे लेखन के साथ, बाइबिल के लिए समर्पित एक बहुत ही उज्ज्वल दिमाग बन गए, हालांकि एक इंजील मेथोडिस्ट परिप्रेक्ष्य से, बाइबिल और रूढ़िवादी ईसाई चिंताओं ने बहुत से लोगों के लिए बहुत अच्छा किया। उन्होंने अपने प्रोजेक्ट के लिए नियो-ऑर्थोडॉक्सी के खिलाफ नाम चुना, उन्होंने अपने पैलियो-ऑर्थोडॉक्सी को बुलाया, कुछ भी नया आविष्कार करने के इरादे से नहीं, बल्कि पिता, मध्ययुगीन, सुधारकों और प्यूरिटन और इतने पर की शिक्षाओं में आनंद लेने के लिए।

दूसरा, मानव जाति के ईसाई दृष्टिकोण के बारे में, ईश्वर की छवि मानवता के लिए अंतर्निहित और अपरिहार्य है। जबकि हम भविष्य के व्याख्यान में इसका पता लगाएंगे, अब हम देखते हैं कि जो कुछ भी मनुष्यों को बाकी सृष्टि से अलग करता है, वे अकेले ही सृष्टिकर्ता के साथ एक सचेत, व्यक्तिगत संबंध बनाने और उसके प्रति प्रतिक्रिया करने, ईश्वर को जानने, यह समझने में सक्षम हैं कि वह उनसे क्या चाहता है, प्रेम करना, पूजा करना, अपने निर्माता की सेवा करना, और उन उद्देश्यों में अपना उद्देश्य और महान आनंद पाना। ये प्रतिक्रियाएँ मनुष्यों के लिए निर्माता के इरादे को पूरी तरह से पूरा करती हैं।

मनुष्य का भी एक शाश्वत आयाम है। समय में आरंभ का परिमित बिंदु एक शाश्वत ईश्वर द्वारा सृष्टि थी, जिसने मनुष्यों को एक शाश्वत भविष्य दिया। इस प्रकार, जब हम पूछते हैं कि मनुष्यों के लिए क्या अच्छा है, तो हमें न केवल लौकिक कल्याण या शारीरिक आराम के संदर्भ में पूछना

चाहिए, बल्कि एक और, और कई अर्थों में, अधिक महत्वपूर्ण, आयाम भी पूछना चाहिए, जिसे पूरा किया जाना चाहिए।

परिणामस्वरूप, हम मनुष्यों पर कोई एहसान नहीं करते जब हम उन्हें अनंत नियति के मुद्दों के बारे में सोचने से बचाते हैं। फिर भी, मनुष्य, निश्चित रूप से, भौतिक सृष्टि और पशु साम्राज्य के एक भाग के रूप में, उन समूहों के अन्य सदस्यों के समान ही ज़रूरतें रखते हैं। हमारा शारीरिक कल्याण महत्वपूर्ण है।

हम भी एकीकृत प्राणी हैं। इसलिए, दर्द या भूख आध्यात्मिक जीवन पर ध्यान केंद्रित करने की हमारी क्षमता को प्रभावित करती है। और हम सामाजिक प्राणी हैं, जिन्हें समाज में रिश्तों के अनुसार काम करने के लिए रखा गया है।

हमें दूसरों की ज़रूरत है, और उन्हें हमारी ज़रूरत है। हम खुद को और अपनी खुशी को सभी मूल्यों में सर्वोच्च मानकर अपना असली अर्थ नहीं खोज सकते, न ही सीधे तौर पर खुशी, तृप्ति या संतुष्टि पा सकते हैं। विडंबना यह है कि यह सच है।

हमारा मूल्य हमें एक उच्च स्रोत द्वारा प्रदान किया गया है, और हम केवल तभी पूर्ण होते हैं जब हम उस उच्चतर सत्ता, सर्वशक्तिमान प्रभु ईश्वर की सेवा और प्रेम करते हैं। तब संतुष्टि ईश्वर के प्रति प्रतिबद्धता के उपोत्पाद के रूप में आती है। सेंट ऑगस्टीन, मैं उनकी शब्दावली को याद करने, उसे अलग करने, उसमें आनंद लेने और उसका उपयोग करने की कोशिश कर रहा हूँ।

और उन्होंने कहा कि हम ईश्वर का उपयोग नहीं करते। हम ईश्वर में आनंद लेते हैं। और अगर हम ऐसा करते हैं, तो हम ईश्वर द्वारा हमें दी गई सभी चीज़ों का उपयोग करते हैं, जिसमें हमारी क्षमताएँ और हमारी दुनिया की विशेषताएँ शामिल हैं, जो ईश्वर में आनंद लेने के लिए हैं।

लेकिन परमेश्वर का उपयोग करने का प्रयास करना मूर्तिपूजा है, और यह पूरी तरह से गलतफहमी है कि वह कौन है और हम उसकी दृष्टि में कौन हैं। तब हमें यीशु के कथन की सच्चाई का एहसास होता है, उद्घरण, क्योंकि जो कोई भी अपना जीवन बचाना चाहता है, वह इसे खो देगा। लेकिन जो कोई भी मेरे लिए और सुसमाचार के लिए अपना जीवन खो देता है, वह इसे बचाएगा।

मार्क 8:35. समकालीन संस्कृति द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पूछे जाने वाले कई सवालों का जवाब मानवता के ईसाई दृष्टिकोण से मिलता है। इसके अलावा, यह दृष्टिकोण व्यक्ति को पहचान का एहसास देता है।

मनुष्य की मशीन के रूप में छवि हमें यह एहसास दिलाती है कि हम महत्वहीन, अनदेखे और महत्वहीन हैं। हालाँकि, बाइबल संकेत देती है कि हर कोई मूल्यवान है और परमेश्वर को ज्ञात है। हमारे सिर के हर बाल की गिनती की जाती है।

मत्ती 10:28 से 31. यीशु ने मनुष्य को बहुत महत्व और मूल्य दिया। उनसे मत डरो जो शरीर को मारते हैं, पर आत्मा को नहीं मार सकते।

बल्कि उससे डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। यह शैतान की ओर नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर की ओर इशारा करता है। क्या दो गौरैया एक पैसे में नहीं बिकती? और उनमें से एक भी तुम्हारे पिता के बिना जमीन पर नहीं गिरेगी।

लेकिन तुम्हारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं। हम परमेश्वर के लिए मूल्यवान हैं। डरो मत। इसलिए, तुम बहुत सी गौरियों से भी अधिक मूल्यवान हो।

हमारे प्रभु के मुख से सुन्दर वाक्पटुता। यीशु ने चरवाहे के बारे में बात की, जो भले ही बाड़े में 99 भेड़ों को सुरक्षित रखता था, फिर भी वह खोई हुई भेड़ को खोजने गया। लूका 15:3 से 7. इसलिए, यीशु ने उन्हें यह दृष्टान्त सुनाया: तुममें से कौन ऐसा है जिसकी सौ भेड़ें हों और उनमें से एक खो जाए, तो वह 99 को खुले मैदान में नहीं छोड़ता, यहाँ तक कि एक बाड़ा भी नहीं, और खोई हुई भेड़ को तब तक खोजता नहीं रहता जब तक वह उसे पा न ले।

जब वह उसे पाता है, तो वह उसे अपने कंधों पर उठाकर आनन्दित होता है। और जब वह घर आता है, तो अपने मित्रों और पड़ोसियों को इकट्ठा करके उनसे कहता है, मेरे साथ आनन्द मनाओ, क्योंकि मैंने अपनी खोई हुई भेड़ को पा लिया है। जैसा कि मैं तुमसे कहता हूँ, स्वर्ग में एक पापी के पश्चात्ताप करने पर उन 99 धर्मी लोगों के पश्चात्ताप करने से अधिक आनन्द मनाया जाएगा, जिन्हें पश्चात्ताप की आवश्यकता नहीं है।

स्वर्ग में आनन्द, हाँ, स्वयं परमेश्वर के लिए आनन्द। हम अपने निर्माता, हमारे पालनहार और हमारे उद्धारक के लिए बहुत मूल्यवान हैं, जिसका लक्ष्य इतिहास और अपने लोगों के जीवन के लिए पूर्णता है। यदि आप चाहें तो प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर द्वारा खोई हुई भेड़ के रूप में माना जाता है।

हम यहाँ यह तर्क दे रहे हैं कि मनुष्यों के बारे में ईसाई दृष्टिकोण उनके लिए किसी भी प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण से अधिक प्रासंगिक है। मानवता की यह छवि मानवीय घटनाओं की पूरी श्रृंखला को किसी भी अन्य दृष्टिकोण की तुलना में अधिक पूर्णता और कम विकृति के साथ दर्शाती है। यह दृष्टिकोण, जीवन के प्रति किसी भी अन्य दृष्टिकोण से अधिक, हमें ऐसे तरीकों से कार्य करने में सक्षम बनाता है जो लंबे समय में गहराई से संतोषजनक होते हैं।

मैं मानवता के परिचय पर हमारे नोट्स के इस भाग को भजन 8 के साथ समाप्त करने जा रहा हूँ, जो बहुत सुंदर है। यह एक सृष्टि भजन है। यह परमेश्वर की दुनिया में आदम और हव्वा की धन्य स्थिति का जश्न मनाता है।

लेकिन हमें पुस्तक के अंत को नहीं भूलना चाहिए, वह समावेश जो मानवीय महत्व और मूल्य और भूमिका के कथन को घेरे हुए है। हे प्रभु, हमारे प्रभु, आपका नाम पूरी धरती पर कितना राजसी है। हाँ, यह एक सृष्टि भजन है।

लेकिन सबसे पहले, यह एक भजन है जो परमेश्वर को उसकी सर्वोच्च रचना, आदम और हव्वा, और उनसे उत्पन्न मानव जाति के लिए महिमा देता है। आपने अपनी महिमा को स्वर्ग से भी ऊपर स्थापित किया है। यह बहुत ही उच्च है।

शिशुओं और शिशुओं के मुंह से, आपने अपने शत्रुओं के कारण शत्रु और प्रतिशोधी को शांत करने के लिए शक्ति स्थापित की है। भगवान बड़े पैमाने पर जाते हैं। उनकी महिमा स्वर्ग से ऊपर है।

फिर वह माइक्रो हो जाता है। छोटे बच्चे अपनी चीखों और शोर से उसका महिमामंडन करते हैं। फिर से मैक्रो।

जब मैं तेरे स्वर्ग को देखता हूँ, जो तेरे हाथों का काम है, चाँद और तारे जो तूने स्थापित किए हैं। फिर से सूक्ष्म। वह मनुष्य कौन है जिसका तू ध्यान रखता है, और वह मनुष्य का पुत्र क्या है जो उस मनुष्य के समानांतर है जिसकी तू परवाह करता है?

फिर भी आपने उसे स्वर्गीय प्राणियों से थोड़ा कम बनाया और उसे महिमा और सम्मान का ताज पहनाया। हमारे निर्माता ने हमारे पहले माता-पिता और हमें, विस्तार से, उसकी छवि में महिमा और सम्मान का ताज पहनाया, महत्वपूर्ण तरीकों से उसके जैसा। उन्हें सिर्फ परमेश्वर को जानने के योग्य नहीं बनाया गया था।

वे परमेश्वर को जानने वाले बनाए गए थे। तूने मनुष्य को अपने हाथों के कामों पर प्रभुता करके बनाया है। तूने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया है, सब भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल, और मैदान के जानवर, आकाश के पक्षी, और समुद्र की मछलियाँ, और समुद्र के रास्तों पर चलनेवाले जितने भी जीव-जंतु हैं।

भजन आठवाँ जिस तरह शुरू होता है, उसी तरह समाप्त भी होता है। हे प्रभु, हमारे प्रभु, सारी पृथ्वी पर तेरा नाम कितना महान है? मनुष्य क्या है? हाँ, यही सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका बाइबलीय रहस्योद्घाटन सबसे अच्छा उत्तर देता है। यही वह प्रश्न है जिस पर हम अगली बार विशेष रूप से मानवता के सिद्धांत पर विचार करते समय अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 2 है, मानवता की छवियाँ।